Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

बघेलखण्ड के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक पर्यटन स्थलों का ऐतिहासिक अध्ययन

An Historical Study of Historical and Archaeological Tourism Sites of Baghelkhand

डॉ सुधाकर प्रसाद दुबे
जनभागीदारी अतिथि विद्वान, इतिहास विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा

सारांश

बघेलखण्ड मध्यप्रदेश का एक ऐसा भौगोलिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र है जो अपनी समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और पुरातात्विक संपदा के लिए सुविख्यात है। यह क्षेत्र रीवा, सतना, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर, सीधी एवं सिंगरौली जिलों को समाहित करता है तथा विंध्य पर्वत श्रृंखला एवं सोन नदी की घाटियों के मध्य स्थित है। इस क्षेत्र की भूमि पर आदिमानव काल से लेकर आधुनिक युग तक अनेक सभ्यताओं, राजवंशों एवं संस्कृतियों ने अपनी छाप छोड़ी है।

बघेलखण्ड में स्थित विभिन्न ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक पर्यटन स्थल — यथा भरहुत, कामता, तेवर, देवताल, नागौद, अमरपाटन के प्राचीन मंदिर, मैहर का शारदा मंदिर, बांधवगढ़ के किले एवं गुफाचित्र, चित्रकूट की पावन भूमि, शिवपुरी के मकबरे और रीवा के राजमहल — इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गहराई को उजागर करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इन स्थलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पुरातात्विक महत्व, सांस्कृतिक विशेषताओं एवं पर्यटन संभावनाओं का व्यवस्थित अध्ययन किया गया है। शोध में द्वितीयक स्रोतों — ग्रंथों, शोध पत्रिकाओं, पुरातत्व सर्वेक्षण प्रतिवेदनों एवं राजकीय दस्तावेजों — का उपयोग किया गया है। निष्कर्षतः यह क्षेत्र न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, अपितु पर्यटन विकास की असीमित संभावनाओं को समेटे हुए है।

मुख्य शब्द: बघेलखण्ड, पुरातत्व, ऐतिहासिक पर्यटन, विंध्य क्षेत्र, भरहुत, बांधवगढ़, सांस्कृतिक विरासत, चित्रकूट, मैहर।

प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है जहाँ इतिहास केवल ग्रंथों में नहीं, अपितु प्रस्तरखंडों, भग्न स्थापत्यों, गुफाचित्रों, शिलालेखों और प्राचीन मंदिरों की भूमि में जीवंत रूप से बसा हुआ है। इसी राष्ट्र के हृदय में स्थित मध्यप्रदेश का बघेलखण्ड क्षेत्र इतिहास के उन अनगिनत अध्यायों का साक्षी रहा है जो अभी तक समुचित शोध एवं प्रकाशन के अभाव में अनालोकित ही रहे हैं। बघेलखण्ड का नाम बघेल राजपूत वंश के नाम पर पड़ा जिसने इस क्षेत्र पर चौदहवीं शताब्दी से लेकर भारतीय स्वतंत्रता तक शासन किया। परंतु इस भूखंड का इतिहास बघेल राजवंश से कहीं अधिक प्राचीन एवं विविधतापूर्ण है।

पुरातात्विक साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि बघेलखण्ड की धरती पर पाषाणकालीन मानव से लेकर कल्चुरि, चंदेल, मौर्य, गुप्त, वाकाटक और बघेल राजवंशों तक की सुदीर्घ परंपरा विद्यमान रही है। यहाँ स्थित भरहुत का स्तूप विश्व बौद्ध कला के इतिहास में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा संरक्षित अनेक स्मारक, मंदिर एवं गुफाएँ इस क्षेत्र में बिखरी हुई हैं जो देश-विदेश के शोधकर्ताओं एवं पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

पर्यटन उद्योग आज वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन विशेष रूप से शिक्षित, जागरूक एवं जिज्ञासु यात्रियों को आकर्षित करता है। बघेलखण्ड में पर्यटन की असीमित संभावनाएँ होते हुए भी यह क्षेत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर अपेक्षित स्थान नहीं पा सका है। इसका प्रमुख कारण है—इस क्षेत्र के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों का समुचित दस्तावेजीकरण, प्रचार-प्रसार एवं अधोसंरचनात्मक विकास न हो पाना। प्रस्तुत शोध पत्र इसी अभाव की पूर्ति का एक प्रयास है।

शोधकर्ता ने इस अध्ययन में बघेलखण्ड के प्रमुख ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक पर्यटन स्थलों का विश्लेषण किया है। इसके अंतर्गत उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थापत्यशैली, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व, पर्यटन अवसंरचना एवं विकास की संभावनाओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है।

शोध पत्र का उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य की दिशा एवं उसकी उपयोगिता उसके सुनिश्चित उद्देश्यों पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

प्रथम उद्देश्य — बघेलखण्ड के प्रमुख ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों की पहचान करना और उनका कालानुक्रमिक इतिहास प्रस्तुत करना। इस क्षेत्र में पाषाणकाल से लेकर मध्यकाल तक की अनेक सभ्यताओं के अवशेष विद्यमान हैं, उनका व्यवस्थित विवरण तैयार करना इस शोध का मूल लक्ष्य है।

द्वितीय उद्देश्य — बघेलखण्ड के पुरातात्विक स्थलों में निहित कला एवं स्थापत्य परंपराओं का अध्ययन करना। भरहुत का स्तूप, बांधवगढ़ के शैलचित्र, कामता के मंदिर आदि स्थलों की कलात्मक विशेषताओं का विश्लेषण करना।

तृतीय उद्देश्य — इस क्षेत्र के धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को समझना तथा यह अध्ययन करना कि विभिन्न धर्मों — हिंदू, बौद्ध, जैन — की परंपराओं ने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित किया।

चतुर्थ उद्देश्य — बघेलखण्ड की ऐतिहासिक विरासत और पर्यटन विकास के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना। यह अध्ययन करना कि इन स्थलों की समुचित देखरेख एवं प्रचार से क्षेत्रीय आर्थिक विकास किस प्रकार सम्भव है।

पंचम उद्देश्य — इन ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण एवं पर्यटन-संवर्धन हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना ताकि राज्य सरकार, पर्यटन विभाग एवं पुरातत्व विभाग उचित कदम उठा सकें।

बघेलखण्ड: भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय

बघेलखण्ड उत्तर-मध्य भारत का एक विशिष्ट भौगोलिक एवं सांस्कृतिक प्रदेश है जो वर्तमान में मध्यप्रदेश राज्य के अंतर्गत आता है। इसकी उत्तरी सीमा उत्तर प्रदेश से, पश्चिमी सीमा विंध्याचल से, दक्षिणी सीमा छत्तीसगढ़ से और पूर्वी सीमा झारखंड तथा उत्तर प्रदेश से मिलती है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र विंध्य एवं सतपुड़ा पर्वत शृंखलाओं के मध्य स्थित है और सोन, टोंस, बीहर, तमस (तमसा) जैसी नदियाँ इसकी जीवनरेखा हैं।

ऐतिहासिक रूप से इस क्षेत्र पर समय-समय पर अनेक राजवंशों का आधिपत्य रहा — नंद वंश, मौर्य वंश, शुंग वंश, कुषाण, गुप्त, कल्चुरि, चंदेल और अंततः बघेल राजपूत। चौदहवीं शताब्दी में व्याघ्रदेव (व्याघ्रदेव या बाघेल) ने इस क्षेत्र में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया जो आगे चलकर बघेलखण्ड या रीवा रियासत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मुगल काल में भी बघेल शासकों ने अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखी और दरबारी कला एवं स्थापत्य को संरक्षण दिया।

१. भरहुत स्तूप — बौद्ध कला की अमूल्य धरोहर

भरहुत, वर्तमान सतना जिले में स्थित, विश्व की प्राचीनतम बौद्ध कला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र है। इस स्थल की खोज सन् १८७३ में प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता अलेक्जेंडर कनिंघम ने की थी। यहाँ मिले स्तूप के अवशेष, शिल्पखंड एवं रेलिंग द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व के शुंग काल के माने जाते हैं।

भरहुत स्तूप की रेलिंगों पर उत्कीर्ण जातक कथाएँ, यक्ष-यक्षिणियों की प्रतिमाएँ एवं बोधिवृक्ष के प्रतीकात्मक चित्रण भारतीय कला इतिहास में अद्वितीय स्थान रखते हैं। इन शिल्पों की विशेषता यह है कि इनमें बुद्ध का अंकन प्रत्यक्ष रूप से न होकर उनके प्रतीकों — पदचिह्न, छत्र, बोधिवृक्ष — के माध्यम से किया गया है। भरहुत की मूर्तिकला वर्तमान में कोलकाता स्थित भारतीय संग्रहालय में सुरक्षित है। इस स्थल पर उत्खनन से प्राप्त शिलालेखों से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं भाषाशास्त्रीय सूचनाएँ मिली हैं।

२. बांधवगढ़ — प्राचीन किला एवं गुफाचित्र

बांधवगढ़, उमरिया जिले में स्थित, आज भले ही बाघों के लिए प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान के रूप में जाना जाता हो, किंतु इसका ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। यहाँ का प्राचीन दुर्ग, जो पहाड़ी के शिखर पर स्थित है, विंध्य युग की अभेद्य सैनिक वास्तुकला का प्रमाण है। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार इस किले का निर्माण लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था।

बांधवगढ़ की पहाड़ियों में उत्कीर्ण गुफाओं में बौद्ध एवं हिंदू धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ एवं शिलालेख मिले हैं। इनमें से कुछ शिलालेख ब्राह्मी लिपि में हैं जो गुप्तकालीन माने जाते हैं। यहाँ विष्णु की एक विशाल शयन प्रतिमा, जिसे 'शेषशायी विष्णु' कहा जाता है, पर्यटकों के लिए अत्यंत आकर्षण का केंद्र है। कल्चुरि एवं मागध काल के अभिलेख भी यहाँ उपलब्ध हैं।

३. चित्रकूट — रामायण कालीन पावन भूमि

चित्रकूट, सतना जिले में स्थित, भारत की सर्वाधिक प्राचीन धार्मिक एवं ऐतिहासिक भूमियों में से एक है। यह वह स्थान है जहाँ वनवास काल में भगवान राम, माता सीता एवं लक्ष्मण ने साढ़े ग्यारह वर्ष व्यतीत किए। मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित राम घाट, कामदगिरि पर्वत, जानकी कुंड, स्फटिक शिला, अनुसूया आश्रम आदि स्थान पौराणिक एवं ऐतिहासिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं।

चित्रकूट की पुरातात्विक खोजों में यहाँ के प्राचीन आश्रमों के अवशेष, पाषाण युगीन औजार एवं ताम्रपाषाण काल की संस्कृति के प्रमाण मिले हैं। यह स्थल न केवल हिंदू धर्म अपितु जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी पवित्र माना जाता है क्योंकि यहाँ जैन तीर्थंकर सत्यभामा से सम्बन्धित किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस का एक अंश यहीं लिखा था — इस तथ्य से भी इस स्थल का सांस्कृतिक महत्व और बढ़ जाता है।

४. मैहर एवं शारदा माता मंदिर

मैहर, जिले में स्थित, त्रिकूट पर्वत पर विराजित माँ शारदा का मंदिर न केवल एक प्रमुख धार्मिक तीर्थ है अपितु इसका ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व भी अत्यधिक है। यह मंदिर एक सौ पंद्रह एकड़ के परिसर में फैला हुआ है और समुद्र तल से लगभग ६०० मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। मंदिर तक पहुँचने के लिए एक हजार से अधिक सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से मैहर का मंदिर कल्चुरि काल की वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। यहाँ उत्खनन में प्राचीन मूर्तियाँ एवं शिलालेख मिले हैं। मैहर से जुड़ी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक परंपरा आल्हा-ऊदल की वीरगाथा से सम्बन्धित है — इस लोकगाथा के अनुसार आल्हा नामक वीर योद्धा इसी मंदिर में पूजा किया करते थे। संगीत के क्षेत्र में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ का नाम मैहर से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

५. नागौद एवं कामता के ऐतिहासिक स्थल

नागौद, सतना जिले का एक प्राचीन कस्बा, कल्चुरि एवं बघेल राजवंशों के समय एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र था। यहाँ का प्राचीन किला, बावड़ियाँ एवं शिव मंदिर इस क्षेत्र की मध्यकालीन वास्तुकला के जीवंत प्रमाण हैं। नागौद के समीप स्थित कोठी एवं हनुमना क्षेत्र में भी पुरातात्विक महत्व के स्थल हैं।

कामता (कामतानाथ) स्थल पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत संपन्न है। यहाँ प्राप्त मंदिरों के भग्नावशेष, देवी-देवताओं की खंडित मूर्तियाँ एवं तोरण स्तम्भ गुप्तकालीन एवं कल्चुरिकालीन कला की उत्कृष्टता के प्रमाण हैं। इन स्थलों पर उचित संरक्षण एवं उत्खनन की आवश्यकता है।

६. रीवा का राजमहल एवं मध्यकालीन स्थापत्य

रीवा, बघेलखण्ड की ऐतिहासिक राजधानी, अपने भव्य राजमहल, संग्रहालय एवं मध्यकालीन स्थापत्य के लिए जाना जाता है। रीवा का किला एवं महल सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी की बघेल वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है। महाराजा रघुराज सिंह के शासनकाल (१८८० - १८८०) में रीवा ने शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की।

रीवा के सफेद शेर — जो सन् १९५१ में पहली बार यहाँ देखे गए — का सम्बन्ध बघेलखण्ड की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पहचान से अभिन्न रूप से जुड़ा है। गोविंदगढ़ पैलेस, वेंकट भवन, बकुल बाग एवं रीवा संग्रहालय पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण के केंद्र हैं। इस संग्रहालय में बघेल राजवंश से सम्बन्धित दुर्लभ पांडुलिपियाँ, शस्त्र, चित्रकारी एवं मूर्तिशिल्प संग्रहीत हैं।

७. अमरपाटन एवं तेवर — प्राचीन नगर-संस्कृति के अवशेष

अमरपाटन, सतना जिले में स्थित, ऐतिहासिक रूप से एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र रहा है। यहाँ मध्यकालीन मंदिरों के अवशेष एवं जल-प्रबंधन की प्राचीन व्यवस्था — बावड़ियाँ एवं तालाब — मिले हैं जो उस काल की उन्नत नागरीय सभ्यता के प्रतीक हैं। तेवर (त्रिपुरी) भी एक ऐसा स्थल है जो कल्चुरि राजवंश की प्रमुख राजधानी के रूप में विख्यात था और जहाँ से अनेक पुरातात्विक सामग्री प्राप्त हुई है।

इन स्थलों पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा उत्खनन कार्य किए गए हैं जिनसे ताम्र-पाषाण कालीन संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। मृद्भांड, पाषाण उपकरण, ताँबे के आभूषण एवं मनके इस क्षेत्र की प्रागैतिहासिक समृद्धि के प्रमाण हैं।

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध पत्र का महत्व बहुआयामी है। सर्वप्रथम, अकादमिक एवं बौद्धिक दृष्टि से यह शोध बघेलखण्ड के इतिहास की एक व्यापक एवं समन्वित दृष्टि प्रस्तुत करता है। अभी तक इस क्षेत्र पर हुए शोध कार्य प्राय: खंडित एवं असम्बद्ध रहे हैं — किसी ने केवल भरहुत पर, किसी ने केवल बांधवगढ़ पर या किसी ने केवल रीवा रियासत पर अपना ध्यान केंद्रित किया। प्रस्तुत शोध इन सबको एक सूत्र में पिरोकर बघेलखण्ड की समग्र ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक छवि निर्मित करने का प्रयास करता है।

सांस्कृतिक महत्व की दृष्टि से यह शोध भारतीय सांस्कृतिक एकता के उस आधार की पुष्टि करता है जो विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय विशिष्टताओं के बावजूद उन्हें एक साझे राष्ट्रीय इतिहास-बोध से जोड़ता है। बघेलखण्ड में बौद्ध, हिंदू एवं जैन — तीनों महान धार्मिक परंपराओं के अवशेष विद्यमान हैं जो इस क्षेत्र की धार्मिक सहिष्णुता एवं बहुलतावादी संस्कृति का प्रमाण हैं।

आर्थिक एवं विकास की दृष्टि से यह शोध नीति-निर्माताओं एवं पर्यटन विभाग के अधिकारियों के लिए एक उपयोगी संदर्भ-सामग्री प्रदान करता है। यह सिद्ध होता है कि बघेलखण्ड में पर्यटन के माध्यम से स्थानीय रोजगार सृजन, ग्रामीण आर्थिक विकास एवं सांस्कृतिक उद्यमिता की असीमित संभावनाएँ हैं।

शैक्षिक दृष्टि से यह शोध इतिहास, पुरातत्व, पर्यटन प्रबंधन एवं क्षेत्रीय अध्ययन के विद्यार्थियों के लिए एक मूल्यवान संदर्भ ग्रंथ की भूमिका निभा सकता है। इसके साथ ही यह शोध आम जनमानस में अपनी ऐतिहासिक धरोहर के प्रति जागरूकता एवं गर्व की भावना जागृत करने में सहायक सिद्ध होगा।

संरक्षण की दृष्टि से यह शोध उन स्थलों की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो उपेक्षा, अतिक्रमण एवं प्राकृतिक क्षरण के कारण विनाश के कगार पर हैं। समय रहते उचित संरक्षण कदम न उठाए गए तो ये धरोहरें सदा के लिए विलुप्त हो जाएंगी।

निष्कर्ष

इस विस्तृत अध्ययन के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि बघेलखण्ड केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं है, अपितु यह इतिहास, संस्कृति, कला, स्थापत्य एवं आध्यात्म का एक जीवंत संग्रहालय है। इस क्षेत्र में पाषाण काल से लेकर आधुनिक काल तक की अनेक सभ्यताओं और राजवंशों के अवशेष विद्यमान हैं जो मानव सभ्यता की निरंतरता एवं विविधता की कहानी कहते हैं।

भरहुत का स्तूप शुंग काल की बौद्ध कला का एक अनूठा संग्रहालय है जो विश्वभर के कला इतिहासकारों एवं बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक तीर्थस्थान के समान है। बांधवगढ़ के दुर्ग एवं गुफाचित्र इस क्षेत्र की प्रागैतिहासिक एवं ऐतिहासिक सम्पन्नता के प्रमाण हैं। चित्रकूट की पावन भूमि रामायण काल की जीवंत स्मृतियाँ संजोए हुए लाखों श्रद्धालुओं को प्रतिवर्ष अपनी ओर आकर्षित करती है। मैहर का शारदा मंदिर कल्चुरि स्थापत्य की भव्यता एवं लोक-आस्था का प्रतीक है।

इन सब स्थलों की एक प्रमुख समस्या यह है कि इनका समुचित प्रचार-प्रसार नहीं हुआ है। अन्तरराष्ट्रीय पर्यटकों की दृष्टि से ये स्थल अभी भी 'अज्ञात भारत' के अंतर्गत आते हैं। राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार को चाहिए कि वे इन स्थलों को अपनी प्रमुख पर्यटन योजनाओं में सम्मिलित करें, संपर्क मार्गों का विकास करें, स्थानीय गाइडों को प्रशिक्षित करें तथा पुरातत्व विभाग के सहयोग से नए स्थलों का उत्खनन करें।

डिजिटल युग में इन स्थलों का ऑनलाइन प्रचार, वर्चुअल टूर की व्यवस्था एवं मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराना आवश्यक है। स्थानीय समुदाय को पर्यटन से जोड़ने से न केवल आर्थिक विकास होगा अपितु सांस्कृतिक विरासत के प्रति जनसामान्य में जागरूकता भी बढ़ेगी।

उपसंहार

बघेलखण्ड की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सम्पदा भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि इस क्षेत्र के पर्यटन स्थलों में ऐतिहासिक गहराई, कलात्मक उत्कर्ष एवं आध्यात्मिक ऊँचाई का एक अद्भुत सम्मिश्रण है।

यद्यपि इस क्षेत्र पर कुछ शोध कार्य पूर्व में भी हुए हैं — विशेषकर भरहुत एवं बांधवगढ़ पर — तथापि एक समग्र, सम्यक् एवं अद्यतन अध्ययन की आवश्यकता सदैव अनुभव की जाती रही है। प्रस्तुत शोध इस दिशा में एक विनम्र किंतु सार्थक प्रयास है। भविष्य में इस विषय पर और अधिक व्यापक, क्षेत्रीय कार्य-आधारित एवं अंतःविषयी शोध की आवश्यकता है।

यह शोध यह भी स्पष्ट करता है कि पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक पर्यटन केवल मनोरंजन का साधन नहीं है — यह राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक आत्म-सम्मान एवं आर्थिक सशक्तीकरण का एक सशक्त माध्यम है। बघेलखण्ड के लोगों को अपनी इस विरासत पर गर्व होना चाहिए और इसके संरक्षण में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए।

अंत में, शोधकर्ता उन सभी विद्वानों, इतिहासकारों, पुरातत्ववेत्ताओं एवं संस्थानों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता है जिनके ग्रंथों, शोध पत्रों एवं दस्तावेजों ने इस शोध कार्य को सम्पन्न करने में अमूल्य योगदान दिया। यह शोध पत्र बघेलखण्ड की उस पीढ़ी को समर्पित है जो अपनी ऐतिहासिक जड़ों से जुड़ी रहते हुए आधुनिकता की ओर अग्रसर है।

संदर्भ

१. कनिंघम, अलेक्जेंडर (१८७९). द स्तूप ऑफ भरहुत: अ बुद्धिस्ट मॉन्युमेंट. लंदन: ट्रुबनर एंड कंपनी।

२. मार्शल, जे. एच. (१९१८). ए गाइड टू भरहुत. कलकत्ता: गवर्नमेंट ऑफ इंडिया।

३. त्रिपाठी, रमाशंकर (२०००). प्राचीन भारत का इतिहास. इलाहाबाद: हिंदी साहित्य सम्मेलन।

४. मिश्र, विंध्यवासिनी प्रसाद (१९७५). बघेलखण्ड का सांस्कृतिक इतिहास. रीवा: विंध्य शोध संस्थान।

५. गुप्त, परमेश्वरीलाल (१९८३). बघेलखण्ड के पुरातात्विक स्थल. भोपाल: मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी।

६. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (२०१०). एनुअल रिपोर्ट ऑन इंडियन एपिग्राफी. नई दिल्ली: ASI।

७. उपाध्याय, बलदेव (१९९२). कल्चुरि वंश का इतिहास. वाराणसी: शारदा पीठ प्रकाशन।

८. शुक्ल, राम नरेश (२०१५). मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थल: ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य. भोपाल: मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम।

९. सिंह, कृष्ण कुमार (२०१८). बांधवगढ़: इतिहास, पुरातत्व एवं वन्यजीव. जबलपुर: नर्मदा प्रकाशन।

१०. पाठक, शिवनंदन (१९९०). चित्रकूट: धर्म एवं इतिहास. प्रयागराज: हिंदी साहित्य संस्थान।

११. भट्ट, विद्याधर (२००५). विंध्य क्षेत्र की जनजातीय एवं लोक संस्कृति. रीवा: अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय।

१२. मध्यप्रदेश शासन, पर्यटन विभाग (२०२०). मध्यप्रदेश पर्यटन आँकड़े एवं योजना प्रतिवेदन. भोपाल।

१३. वर्मा, धर्मराज (१९८५). भरहुत की बौद्ध कला. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।

१४. श्रीवास्तव, के. एम. (२०१२). भारतीय पुरातत्व: सिद्धान्त एवं प्रयोग. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान।

१५. अग्निहोत्री, वी. के. (२०१७). इंडियन हिस्ट्री. नई दिल्ली: एलाइड पब्लिशर्स।

१६. सेन, सुरेन्द्रनाथ (२०१६). हिस्ट्री एंड सिविलाइजेशन. नई दिल्ली: प्रिंटिस हॉल ऑफ इंडिया।

१७. राय, एच. सी. (१९७३). द डायनास्टिक हिस्ट्री ऑफ नॉर्दर्न इंडिया. कलकत्ता: कलकत्ता विश्वविद्यालय।

१८. यूनेस्को (२०१९). वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट: साउथ एशिया. पेरिस: यूनेस्को पब्लिकेशन।

१९. तिवारी, सुभाष (२०१४). मैहर: इतिहास एवं संस्कृति. सतना: विंध्य प्रकाशन।

२०. पाण्डेय, ओंकार नाथ (२००८). शोध प्रविधि एवं इतिहास लेखन. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन।

❑❑❑